कुत्ते रोते क्यों हैं?

श्रुति शर्मा

एक दिन रात को मैं सोने ही जा रही थी कि कुत्तों के रोने की आवाज़ें आने लगी। मेरे दिमाग में एक सवाल ने दस्तक दी कि क्या ये कुत्तों के रोने की ही आवाज़ है? दुनिया भर में तो हर इलाके के, हर समुदाय के लोग कुत्ते की इस आवाज़ को रोना ही बताते हैं लेकिन क्या वास्तव में ये कुत्ते की रोने की आवाज़ है? और दूसरा सवाल यह उठा की क्या ये रात को ही इस तरह की आवाज़ें निकालते होंगे? कौन-सी स्थितियां होंगी जिसमें कुत्ते इस तरह की आवाज़ें निकालते होंगे? पूरी रात इन्हीं सवालों के साथ बीत गई। अगले दिन से मैंने इन सब सवालों के जवाब पता लगाने और कुत्तों का अवलोकन करना शुरू किया। बहुत कुछ खंगालने, लोगों के अवलोकन और खुद के अवलोकन से बहुत रोचक व महत्वपूर्ण बातें उभरीं। इस लेख में कुत्ते की आवाज़ों को समझने का प्रयास किया गया है।

कुत्तों से तो हम सब अच्छी तरह परिचित हैं। कुत्ते सड़कों, गलियों में यहां-वहां मटर गश्ती करते दिख जाते हैं। लोगों में कुत्ते पालने का शौक भी है। कई लोगों के घर में कुत्ते परिवार का हिस्सा बन जाते हैं, देखभाल और प्यार पाते हैं तथा परिवार की सुरक्षा और उनका मनोरजंन भी करते हैं।

हम सभी ने कुत्तों को अलग-अलग तरह की आवाज़ें निकालते सुना हैः भौंकना, रोना, गुर्राना, चीखना आदि। हम जानवरों की भाषा समझ नहीं पाते, उनकी आवाज़ों के अर्थ कुछ अनुमान से और कुछ अवलोकन करके निकाल पाते हैं।

आइए, कुत्तों की आवाज़ों को विस्तार में समझने की कोशिश करते हैं। कुत्तों में आवाज़ें निकालने के कई तरह के कारण होते हैं परंतु सम्प्रेषण एक मुख्य कारण हैं। मध्य रात्रि में अक्सर कुत्तों के रोने पर दुनिया में हर कहीं के लोगों की मान्यता है कि अगर कुत्ता रो रहा है तो उसे भूत या यम दिखाई दे रहा है। यानी कुत्तों का रोना अशुभ संकेत देता है। लेकिन सच्चाई तो यह है कि कुत्तों की यह आवाज़ रोने की नहीं होती। अंग्रेज़ी में इस आवाज़ को हाउलिंग कहा जाता है। हिन्दी में इसका कोई दूसरा पर्यायवाची न होने की वजह से हम हिन्दी में भी इसे हाउलिंग ही कहेंगे।

हम जानते हैं कि भेड़िए कुत्तों के पूर्वज हैं और यह भी निश्चित है कि कुत्तों को हाउलिंग की परंपरा भेड़ियों से ही मिली है। रात में सियारों, भेड़ियों, लोमड़ियों की भी हाउलिंग सुनी जा सकती है। इस कुल के सभी जंतु, जैसे भेड़िया, कुत्ता, सियार, लोमड़ी सभी हाउल करते हैं। हाउल करने वाले जंतु झुंड में रहते हैं। हाउलिंग को समझने के लिए कुत्तों के कान और उनके सुनने की क्षमता की बात करना ज़रूरी है।

कुत्तों में सुनने की क्षमता हम इंसानों से कहीं ज़्यादा होती है। कुत्तों के कान बहुत संवेदनशील होते हैं। अतः ये बहुत दूर से आई हुई आवाज़ों को भी बहुत साफ सुन पाते हैं। हम इंसान 20 Hz (हर्टज़) से 20,000 Hz की आवृत्ति की ध्वनि को सुनने में सक्षम हैं। दूसरी ओर, कुत्ते 40 Hz से 40,000 Hz की आवृत्ति तक की ध्वनि को सुन सकते हैं। हर्टज़ यानी प्रति सेकंड कंपनों की संख्या। तो 20 कंपन प्रति सेकंड 20 हर्टज़ होगा और 20,000 हर्टज़ यानी 20,000 कंपन प्रति सेकंड।

अर्थात जो ध्वनि इंसानों को सुनाई नहीं दे पाती वह कुत्तों को सुनाई देती है। इसी वजह से कुत्ते रात के समय ज़्यादा हाउलिंग करते सुने जाते हैं क्योंकि उस

समय चारों तरफ सन्नाटा होता है तथा दूर की आवाज़ें कुत्तों को आसानी से सुनाई दे जाती हैं और वे प्रायः हाउल करने लगते हैं। हालांकि कुत्ते दिन में भी हाउल करते हैं मगर शोर के बीच हम सुन नहीं पाते या उस ओर ध्यान नहीं जाता है। हाउल के कारणों के बारे में आगे जानेंगे।

कुत्तों को एक विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है जिसमें उनके लिए जिस सीटी का प्रयोग किया जाता है उसमें पराध्वनि (अल्ट्रासोनिक साउंड) का प्रयोग किया जाता है। इंसान इस ध्वनि को नहीं सुन सकते परन्तु कुत्तों के कान पराध्वनि के प्रति संवेदनशील होते हैं और वे इस पर तुरंत प्रतिक्रिया दिखाते हैं।

हाउल के कारण

कुत्तों के रात में हाउल करने का एक कारण तो यही है कि उन्हें रात की खमोशी में बहुत दूर की आवाज़ साफ सुनाई देती है। अगर कोई कुत्ता बहुत दूर से हाउल कर रहा हो तब कुत्ता उसे सुनकर उसके जवाब में हाउल करता है।

कुत्तों के कानों तक अगर किसी वाहन के सायरन या इसी तरह की कोई ध्वनि पहुंचती है तब कुत्ता प्रायः हाउल करने लगता है। इसी संदर्भ में दो बातें सामने आई है। एक तो यह कि सायरन या तेज़ ध्वनि से परेशान होकर कुत्ते हाउल करते हैं और दूसरी यह कि सायरन की ध्वनि को कुत्ते किसी और कुत्ते की हाउल समझ बैठते हैं और उसकी प्रतिक्रिया में हाउल करते हैं।

वैसे जंतुओं के डॉक्टर कहते हैं कि ज़रूरी नहीं कि हर कुत्ता हमेशा किसी तेज़ ध्वनि से परेशान होकर ही हाउल करता हो। कुछ शोधकर्ताओं ने इस बात को खारिज करते हुए कहा है कि कुत्ते हाउल तभी करते हैं जब उन्हें किसी तरह का दर्द हो रहा हो और यह दर्द किसी भी कारण से हो सकता है या किसी आवाज़ से परेशान होकर भी।

अगर पालतू कुत्तों की बात करें तो कुत्ते के पालकों का अवलोकन है कि जब घर में टेलीविज़न चल रहा हो या कोई वाद्य यंत्र बज रहा हो तब कुत्ता हाउल करता है। हो सकता है कि कुत्ता वाद्य यंत्र और टीवी की आवाज़ से परेशान होकर हाउल करता है। ऐसा होगा तो वह उन आवाज़ों की प्रतिक्रिया स्वरूप हाउल करेगा। या यह भी हो सकता है कि वह टीवी और वाद्य यंत्र की आवाज़ से अपनी आवाज़ मिलाकर हाउल करेगा।

हाउलिंग का एक कारण कुत्ते के अकेलेपन से भी सम्बंधित है। पालतू कुत्तों को अगर उनके पालक घर पर अकेला छोड़, ताला लगाकर कुछ समय के लिए बाहर चले जाते हैं तब कुत्ते घर में लगातार ज़ोर-ज़ोर से हाउल करते हैं। घर के सदस्यों की उपस्थिति पाते ही वे हाउल करना बंद कर देते हैं।

हाउल से सम्बंधित एक रोचक बात यह है कि हर कुत्ते की हाउल ध्वनि दूसरे कुत्ते की हाउल ध्वनि से अलग होती है। इस वजह से कुत्ते अपने समूह के सदस्यों तथा दूसरे समूह के सदस्यों की हाउल में फर्क समझ पाते हैं। इसलिए अगर कुत्तों के इलाकों में किसी अन्य समूह का कुत्ता आ जाए और हाउल करे तो इन्हें पता चल जाता है कि इनके इलाके में कोई बाहरी कुत्ता आ गया है। कुत्तों के अपने समूह का कोई सदस्य कहीं दूर किसी मुसीबत में फंस गया हो तो उस स्थिति में मुसीबत में फंसा हुआ कुत्ता हाउल करके मुसीबत के बारे में खबर देता है।

कुत्तों में हाउल करने का एक कारण उनके प्रजनन काल से भी है। प्रजनन काल के दौरान कुतिया एक विशेष प्रकार की गंध छोड़ती है। यह गंध बहुत प्रभावकारी होती है तथा दूर-दूर तक पहुंचती है। जिन नर कुत्तों तक ये गंध पहुंचती है वे उस गंध को सूंघते हुए उस तक पहुंच जाते हैं। कुत्तों के प्रजनन काल में हाउलिंग की प्रक्रिया अधिक होने लगती है।

हाउल के कारणों की संभावित स्थितियों की तो लगभग हम बात कर चुके हैं। अब यहां एक सवाल और उठ सकता है कि हाउलिंग के दौरान कुत्तों का मुंह आसमान की तरफ क्यों होता हैं? कारण यह लगता है कि यदि ध्वनि अधिक आवृत्ति वाली होगी तो बहुत दूर तक पहुंचेगी। हमें भी ज़ोर की आवाज़ निकालनी हो तो हम भी ऊपर मुंह करके निकालते हैं। आइए हाउल के अलावा कुत्तों द्वारा निकाली गई और भी आवाज़ों को संक्षिप्त में समझते हैं।

पहले भौंकने के कारणों की बात करते हैं।

भौंकना कुत्तों की सबसे प्रचलित भाषा है। कुत्तों का भौंकना भी उनके बीच बातचीत का एक माध्यम है। जैसे कुत्तों के इलाके में कोई दूसरे समूह का कुत्ता आ जाए तो कुत्ते भौंकने लगते हैं। कुत्ते इंसानों को भी अच्छी तरह से समझ पाते हैं। जैसे पालतू कुत्ते तब भौंकते हैं जब उनके मनुष्य परिवार के घर में कोई मेहमान आया हो, रात को चौकीदार की सीटी पर भौंकते हैं। किसी की आहट पर भी भौंक सकते हैं।

कुत्ते तब भी भौंकते है जब उन्हें कुछ चाहिए और यदि उन्हें कोई नहीं सुन रहा होता है तब अपनी तरफ ध्यान आकर्षित करवाने के लिए भी भौंकते हैं।

कुत्ते भौंककर उनके अंदर की भावनाओं को बाहर निकाल पाते हैं। भौंकना कुत्तों के लिए गुस्सा, डर, प्यार, उत्सुकता जताने का एक माध्यम है। कुत्ते हर बार अलग आवाज़ में भौंकते हैं। हम इंसान तो इतना गौर से भौंकने की ध्वनियों को सुनने में फर्क महसूस नहीं कर पाते परन्तु ये कुत्ते आपस में इन ध्वनियों को समझ पाते हैं। उनके हर बार भौंकने का मतलब अलग-अलग हो सकता है।

कुत्तों की तमाम आवाज़ों में गुर्राना भी शामिल है जिसे अंग्रेज़ी में ग्राउलिंग कहते हैं। गुर्राने से कुत्तों का साफ मतलब होता है कि उन्हें गुस्सा आ रहा है। कुत्ते उनकी असुविधा बताने के लिए गुर्राते हैं। कुत्तों के गुर्राने से उनकी तरफ से ये संकेत मिलते है कि वे काट भी सकते हैं। डर भी कुत्तों के गुर्राने का एक कारण हो सकता है। जैसे जब कुत्ते किसी अजनबी को देख लेते हैं तब वे डरकर उस पर गुर्राते हैं और यह कुत्तों का तरीका होता है अजनबी इंसान को कहने का कि 'मुझसे दूर हटो'।

कई नर कुत्ते अपने खाने की वस्तु या हड्डी के लिए बहुत अधिक अपनत्व दिखाते हैं और अगर कोई इन वस्तुओं के आसपास भी फटकता है तो वे गुर्राते हैं। अपने इलाके में किसी को घुसने न देने के लिए भी कई बार कुत्तों को गुर्राते हुए सुना गया है। किसी तरह का दर्द होने पर या चोट लगने पर कुत्ते गुर्राते है। जंतुओं के डॉक्टरों का कहना है कि जब कुत्तों को असहनीय पीड़ा होती है वह समय उनके लिए उलझन वाला समय होता है और वे गुर्राते हैं।

कुत्ते कराहते भी हैं। इसे अंग्रेज़ी में व्हाइनिंग कहते हैं। कूं-कूं की ध्वनि में कराहते हुए अक्सर कुत्तों को सुना जा सकता है। यह ध्वनि भी ऊंचे सुर में निकाली जाती है परन्तु ये ध्वनि नाक से निकाली जाती है इसको निकालते समय कुत्तों का मुंह बंद होता है। कुत्तों का कराहना तब संभव है जब उन्हें बाहर घूमने जाना हो। मलमूत्र करने जाने के लिए भी कुत्ते कराहते हैं। कई बार कुत्ते कराहने की ध्वनि खत्म होते ही भौंकना चालू कर देते हैं। ठिनठिनाना भी कुत्तों के बीच बात करने का एक माध्यम है। आसान शब्दों में इसे तीखी आवाज़ में भौंकना भी कहा जा सकता है। अंग्रेज़ी में इसे व्हीम्पर्स कहा जाता है।

कुत्ते तीखी आवाज़ में तभी भौंकते हैं जब वे दुखी हों। ऐसी स्थिति में वे उनके समूह के सदस्यों को या मित्र मनुष्यों को अपने दुख के बारे में बताने की या उनसे संवाद बिठाने की कोशिश करते हैं, और इसके बाद उन सदस्यों से सकारात्मक प्रतिक्रिया की उम्मीद भी करते हैं।

कुत्ता उस स्थिति में भी ठिनठिनाता है जब उसे मारा जाता है या ठुकराया जाता है। येल्पिंग (yelping) भी कुत्तों द्वारा निकाली गई एक तरह की आवाज़ है जो भौंकने से अलग होती है। इसमें कुत्ता ऊंचे सुर में ध्वनि निकालता है परन्तु भौंकने की तुलना में यह ध्वनि काफी मुलायम तथा धीमी निकलती है।

कुत्तों की इन अलग-अलग आवाज़ों की समझ बनने के बाद उनके मन की स्थिति को समझने में बहुत आसानी हो जाती है और फिर कुत्तों से दोस्ती करना काफी हद तक आसान हो जाता है। ***(स्रोत फीचर्स)***